International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709; Print ISSN: 2664-8695
Received: 11-12-2019; Accepted: 10-01-2020; Published: 25-01-2020
Volume 2; Issue 1; 2020; Page No. 26-28

भारत में बेरोजगारीः एक अध्ययन

डॉ. पुष्पा देवांगन[1], डॉ. बलभद्र प्रसाद देवांगन[2]
[1] प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, के. पी. महाविद्यालय, बंधापाली, सारंगढ़, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत
[2] प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, अशोका महाविद्यालय, उम्मेदपुर, सारंगढ, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
बेरोजगारी किसी भी देश के लिए एक भयावह समस्या है बेरोजगारी का असर व्यक्ति के सेहत पर भी पड़ता है। हालिया शोध में यह सामने आया है कि यदि कोई व्यक्ति बेरोजगार है तो बेरोजगारी का प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर परिलक्षित होता है और उसके स्वास्थ्य पर बेरोजगारी का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आज भारत में भी बेरोजगारी एक प्रमुख समस्या के रूप में उभर चुकी है और वर्ष दर वर्ष बेरोजगार व्यक्तियों की संख्या में बढ़ोतरी होती जा रही है जो कि एक बहुत बड़ी चुनौती है। इस शोध में बेरोजगारी का अर्थ, बेरोजगारी के प्रकार, बेरोजगारी मापन की विधियां, बेरोजगारी से संबंधित अन्य अवधारणाएं एवं बेरोजगारी से संबंधित कई आंकड़ों पर चर्चा की गई है।

मुख्य शब्दः बेरोजगारी दर, बेरोजगारी अनुपात, श्रम बल भागीदारी दर, श्रमिक जनसंख्या अनुपात, दीर्घकालीन बेरोजगारी, लघु एवं कुटीर उद्योग

बेरोजगारी वर्तमान समाज की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। बेरोजगारी और अर्थव्यवस्था एक दूसरे से संबंधित है। यदि किसी देश में बेरोजगारी बढ़ती है तो उस देश की अर्थव्यवस्था कमजोर होने लगती है साथ ही साथ देश के विकास की रफ्तार कम हो जाती है। सभी को रोजगार न मिल पाने के कारण मानव संसाधन का उचित उपयोग नहीं हो पाता है। ठंदमतरमम एवं क्नसिव ने अपनी किताब च्वत म्बवदवउपबे में लिखा है कि गरीबी ही गरीबी और बेरोजगारी का कारण है अर्थात् गरीब और बेरोजगार लोग गरीबी और बेरोजगारी से बाहर निकलने के लिए उचित प्रयास नहीं करते हैं। जो लोग गरीबी और बेरोजगारी से बाहर निकलने के लिए मेहनत और प्रयास करते हैं वे समृद्धि के पथपर आगे बढ़ जाते हैं। भारत की अर्थव्यवस्था स्वतंत्रता के बाद से ही स्ंइवनत ैनतचसने अर्थव्यवस्था रही है अर्थात् भारत में किसी भी काम को करने के लिए लोग बहुत ही आसानी से मिल जाते हैं। देश में आर्थिक वृद्धि और रोजगार के बीच की कड़ी कई दशकों से कमजोर है।

शोध के उद्देश्य
1. शोध से संबंधित प्रमुख आंकड़ों का अध्ययन करना।
2. विभिन्न वर्षों में बेरोजगारी दर के आंकड़ों का अध्ययन करना।
3. भारत में राज्यवार बेरोजगारी दर का अध्ययन करना।
4. श्रम बल भागीदारी दर के आंकड़ों का विश्लेषण करना।
5. श्रमिक जनसंख्या अनुपात के आंकड़ों का विश्लेषण करना।

बेरोजगारी का अर्थ एवं परिभाषा
सामान्यतः बेरोजगारी से आशय लोग कार्य करने वाली आयु की जनसंख्या के काम न करने से लगाते हैं, अर्थात् कोई भी ऐसा व्यक्ति जो कार्य करने की आयु का है और उसके पास रोजगार नहीं है तो उसे बेरोजगार कहा जाता है जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है वास्तविक रूप से यदि कोई व्यक्ति कार्य करने की आयु का है, कार्य करने का इच्छुक है और वह रोजगार की तलाश के लिए अपना पूर्ण प्रयत्न कर रहा है और इसके बावजूद भी यदि उसे रोजगार नहीं मिलता तो ऐसे व्यक्ति को बेराजगार कहा जाएगा।

बेरोजगारी के तीन तत्व हैं :–
1. व्यक्ति को कार्य करने में सक्षम होना चाहिए।
2. व्यक्ति में कार्य करने की इच्छा होनी चाहिए।
3. व्यक्ति को कार्य ढूंढने का प्रयास करना चाहिए।

पीगू के अनुसार :– "किसी व्यक्ति को तभी बेरोजगार कहा जा सकता है जब उसे रोजगार प्राप्त करने की इच्छा तो होती है परंतु रोजगार नहीं मिलता है।"

विलियम बेवरिज के अनुसार :– "पूर्ण रोजगार का अर्थ है बेरोजगार व्यक्तियों की तुलना में अधिक रिक्त स्थान रखना। इसका अर्थ यह है कि नौकरी उचित मजदूरी पर उपलब्ध है और वह इस प्रकार की है जो ऐसे स्थानों पर केंद्रित है कि बेरोजगार व्यक्ति उन्हें सरलता से प्राप्त करने की आशा रख सकता है।"

बेरोजगारी के प्रकार
1. **मौसमी बेरोजगारी** :– मौसमी बेरोजगारी ऐसी बेरोजगारी को कहा जाता है जिसमें कुछ विशिष्ट महीनों में रोजगार उपलब्ध नहीं हो पाता है। उदाहरण के लिए ईटा भट्ठा मे काम करने वाले लोग बरसात के महीने में बेरोजगार हो जाते हैं। कृषि में भी फसल कटने के पश्चात् कुछ महीनों के लिए किसी–किसी इलाके में किसान बेरोजगार हो जाते हैं।
2. **घर्षणात्मक बेरोजगारी** :– घर्षणात्मक बेरोजगारी ऐसी बेरोजगारी को कहा जाता है जिसमें एक व्यक्ति एक नौकरी को छोड़कर दूसरे नौकरी की तलाश करता है तो इस बीच वह जितने दिन बेरोजगार रहता है तो इसे ही घर्षणात्मक बेरोजगारी कहा जाता है।
3. **संरचनात्मक बेरोजगारी** :– संरचनात्मक बेरोजगारी से तात्पर्य ऐसी बेरोजगारी से है जिसमें व्यक्तियों के लिए रोजगार तो है लेकिन उस कार्य को करने के लिए व्यक्ति के पास कौशल नहीं है, जिसके कारण वह बेरोजगार रहता है तो

इस प्रकार की बेरोजगारी को ही संरचनात्मक बेरोजगारी कहा जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि बाजार में उपलब्ध नौकरी और श्रमिकों के कौशल में असंतुलन संरचनात्मक बेरोजगारी को जन्म देता है।

4. **चक्रीय बेरोजगारी** :– चक्रीय बेरोजगारी अर्थव्यवस्था में उतार–चढ़ाव का परिणाम है। जब मंदी बढ़ती है तो बेरोजगारी भी बढ़ती है और आर्थिक विकास की गति भी कम होती है और जब मंदी खत्म हो जाती है तो फिर से रोजगार में बढ़ोतरी होती है और आर्थिक विकास की गति तेज हो जाती है और यह एक चक्र के रूप में चलता रहता है इसलिए इसे चक्रीय बेरोजगारी कहते हैं।
5. **अदृश्य बेरोजगारी/छिपी हुई बेरोजगारी/ प्रच्छन्न बेरोजगारी** :– अदृश्य बेरोजगारी ऐसी स्थिति में होती है जब वास्तव में किसी कार्य को करने में आवश्यकता से अधिक लोग कार्यरत होते हैं, ऐसे लोगों के होने या ना होने से उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है उदाहरण के रूप में यदि किसी खेत में कृषि कार्य हेतु केवल दो व्यक्तियों की जरूरत है लेकिन फिर भी घर के सभी सदस्य इस कृषि कार्य में लगे हुए हैं तो यह अदृश्य बेरोजगारी का उदाहरण है।
6. **तकनीकी बेरोजगारी** :– तकनीकी बेरोजगारी स्वचालित मशीनों के अधिक प्रयोग करने के कारण बढ़ती है। उदाहरण के लिए कृषि के क्षेत्र में यंत्रीकरण के कारण अब कृषि कार्य हेतु कम लोगो की जरूरत पड़ती है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तकनीक का महत्व बढ़ गया है और बहुत सारे कार्य तकनीक के माध्यम से होने के कारण लोगों को बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है।

बेरोजगारी के प्रमुख कारण

1. **अत्यधिक जनसंख्या** :– अत्यधिक जनसंख्या देश में बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण है। देश में संसाधन तो सीमित है जबकि जनसंख्या बढ़ती जा रही है और ऐसी स्थिति में बेरोजगारी भी बढ़ती है। सन 1979 में चीन ने बढ़ती हुई जनसंख्या से परेशान होकर एक बच्चे की नीति अपनाई थी, हालांकि चीन की सरकार ने एक बच्चे की नीति को अब खत्म कर दिया है।
2. **लघु एवं कुटीर उद्योगों का पतन** :– लघु एवं कुटीर उद्योगों का पतन भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण है। जब तक भारत में अंग्रेजों का आगमन नहीं हुआ था तब तक भारत में लघु एवं कुटीर उद्योगों की प्रधानता थी। अंग्रेजों के आगमन के पश्चात् अंग्रेजों ने भारत के लघु एवं कुटीर उद्योगों को बर्बाद कर दिया। अब ईस्ट इंडिया कंपनी स्वयं किसानों से कच्चा माल लेकर वस्तुओं का निर्माण करने लगी एवं उन्हें महंगे दामों मे बेचने लगी जिससे यहां के लोग बेरोजगार हो गए और बदतर जीवन जीने को मजबूर हो गए। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने कुटीर एवं लघु उद्योगों पर ध्यान दिया लेकिन जितना ध्यान देना चाहिए था उतना नहीं दिया गया।
3. **शिक्षा व्यवस्था में दोष** :– आज हमारे देश में ऐसा नहीं है कि लोग शिक्षित नहीं है। हमारे देश में विद्यार्थी विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं लेकिन वह शिक्षा उन्हें रोजगार प्रदान नहीं करवा पा रही है। इसका मूल कारण यह है कि जो शिक्षा प्रदान की जा रही है वह ना तो रोजगार परक है और ना ही कौशल पूर्ण। जब तक देश में कौशल युक्त और रोजगार परक शिक्षा प्रदान नहीं की जाएगी तब तक देश से बेरोजगारी खत्म नहीं हो सकती।
4. **कृषि पर निर्भरता** :– कृषि पर निर्भरता बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण है। हमारे देश में लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है। कभी–कभी कृषि कार्य में बहुत कम लोगों की जरूरत होती है लेकिन फिर भी अन्य कोई रोजगार न होने के कारण वह कृषि कार्य में संलग्न रहते हैं। वर्तमान में देश में गुड गवर्नेंस और उदार बाजार की आवश्यकता है जिससे देश में विनिर्माण क्षेत्र का विकास एवं विस्तार हो सके और इससे कृषि क्षेत्र पर निर्भरता में कमी आएगी जिससे देश में बेरोजगारी में कमी आ सकेगी।
5. **कुशल जनशक्ति की कमी** :– कुशल जनशक्ति की कमी बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण है। आज का युग तकनीक का युग है और इस युग में किसी को तकनीक का ज्ञान नहीं है तो उसे रोजगार प्राप्त करने में बहुत मुश्किल होगी। लोगों का यह मानना है कि जब तकनीक में वृद्धि होती है तो रोजगार में कमी आ जाती है जबकि यह वास्तविकता नहीं है। नई तकनीक के अस्तित्व में आने के कारण रोजगार की प्रकृति बदल जाती है और लोगों को उसके अनुरूप अपने आप को प्रशिक्षित करना पड़ता है। यदि किसी देश की जनशक्ति तकनीक के अनुरूप अपने आप आप को नहीं बदल पाती है तो इससे रोजगार में कमी आएगी। इतिहास गवाह रहा है कि जब भी नई तकनीक आती है तो उससे उत्पादन में बढ़ोतरी होती है लेकिन जब तक नई तकनीक सृजन कि यदि हम बात करें तो घर बनाने की नई 3क प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी के उदाहरण को देख सकते हैं। इस तकनीक से घर अच्छे बनेंगे, मजबूत बनेंगे और रोजगार का भी सृजन होगा।
6. **आर्थिक समानता** :– आर्थिक समानता बेरोजगारी को बढ़ाने का एक प्रमुख कारण है। जब केवल किसी विशेष क्षेत्र पर ही शिक्षा, स्वास्थ्य एवं बुनियादी सुविधाओं को उपलब्ध कराया जाएगा तो केवल उसी क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध हो पाएंगे इसलिए यह जरूरी है कि प्रत्येक क्षेत्र विशेष के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाए।

बेरोजगारी का दुष्प्रभाव

बेरोजगारी व्यक्ति को उसके परिवार को एवं समाज को बुरी तरह से प्रभावित करती है। इससे परिवार एवं समाज में बिखराव उत्पन्न होता है। एक बेरोजगार व्यक्ति बहुत ही हताश निराश कमजोर हो जाता है। उसका परिवार एवं समाज में सम्मान कम हो जाता है जिसके कारण वह अपनी ऊर्जा को गलत दिशा में लगता है और गलत तरीके से पैसे कमाने का प्रयास करता है। एक बेरोजगार व्यक्ति समाज में असामाजिक गतिविधियों में लिप्त हो जाता है जिससे समाज में नशा, अपराध एवं अन्य मानसिक एवं सामाजिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। बेरोजगारी के कारण समाज में तनाव एवं आत्महत्या जैसी घटनाएं भी घटित होती हैं। बेरोजगारी इतनी खतरनाक समस्या है कि इसके कारण पति–पत्नी, बच्चों एवं माता–पिता में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, क्योंकि बेरोजगारी के कारण सभी सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती। देश में बेरोजगारी से हमारी अर्थव्यवस्था कमजोर हो जाती है और देश के श्रम बल में कमी आ जाती है जिसके कारण हमारी जीडीपी में गिरावट आती है। देश में जितनी ज्यादा बेरोजगारी बढ़ेगी उतनी ही ज्यादा गरीबी भी बढ़ेगी और इस प्रकार से देश में बेरोजगारी और गरीबों की संस्कृति का निर्माण हो जाएगा।

बेरोजगारी से संबंधित कुछ प्रमुख अवधारणाएं

1. **बेरोजगारी अनुपात** :– बेरोजगारी अनुपात से तात्पर्य कुल श्रम बल में से बेरोजगार व्यक्तियों का प्रतिशत है। उदाहरण

के लिए यदि किसी देश का कुल श्रम बल 40 करोड़ है और बेरोजगार व्यक्तियों की संख्या 5 करोड़ हो तो उस देश का बेरोजगारी अनुपात साठ प्रतिशत होगा।

2. **श्रमिक जनसंख्या अनुपात** :– श्रमिक जनसंख्या अनुपात से तात्पर्य कुल जनसंख्या में से कार्यशील जनसंख्या के प्रतिशत से लगाया जाता है। यदि किसी देश का श्रमिक जनसंख्या अनुपात उच्च है तो इसका मतलब यह है कि उस देश की अधिकतर जनसंख्या आर्थिक क्रियाओं में लगी हुई है।
3. **श्रम बल भागीदारी दर** :– इसका तात्पर्य 16 से 64 वर्ष के ऐसे व्यक्तियों के प्रतिशत से है जो किसी न किसी रोजगार में है या रोजगार प्राप्त करने के लिए सक्रिय रूप से तलाश कर रहे हैं। ऐसे विद्यार्थी जो अभी भी पढ़ाई कर रहे हैं, ऐसी महिलाएं जो हाउसवाइफ के रूप में कार्य कर रही हैं, ऐसे व्यक्ति जो 64 वर्ष से ऊपर के हैं उन्हें श्रम बल भागीदारी दर के अंतर्गत नहीं रखा जाता है।
4. **बेरोजगारी दर** :– बेरोजगारी दर से तात्पर्य किसी भी देश के कुल कार्य बल में से बेरोजगारों का प्रतिशत है।

बेरोजगारी मापन

जब 2017 में च्स्थ्ैै सर्वेक्षण अस्तित्व में आया तो इसके अनुसार उस समय भारत में बेरोजगारी दर 6.1 प्रतिशत थी जो कि भारत की अब तक की सबसे ज्यादा रिकॉर्ड की गई बेरोजगारी दर थी। ध्यातव्य है कि यह बेरोजगारी दर पूरे 1 वर्ष के सर्वेक्षण पर आधारित थी।

चूंकि भारत एक जटिल अर्थव्यवस्था वाला देश है, भारत में अधिकतर रोजगार की प्रकृति अनौपचारिक है इसलिए यहां बेरोजगारी का मापन करना अत्यंत जटिल कार्य है। भारत में बेरोजगारी का मापन करने के लिए सन 1970 में भगवती समिति का निर्माण किया गया था। इस समिति ने बेरोजगारी को मापने के लिए तीन तरीके बताए थे। भारत में बेरोजगारी का मापन राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय छैव् के द्वारा च्स्थ्ैै के माध्यम से कराया जाता है।

दीर्घकालीन बेरोजगारी :– यदि किसी व्यक्ति को एक सर्वेक्षण वर्ष में 183 दिन (प्रतिदिन 8 घंटे) रोजगार नहीं मिल पाता है तो ऐसे व्यक्ति को बेरोजगार व्यक्ति की श्रेणी में गिना जाएगा और वह दीर्घकालिक बेरोजगारी के अंतर्गत गिना जाएगा। वर्तमान में अब 183 दिन के मानक को बदल दिया गया है और इसे 273 दिन कर दिया गया है।

साप्ताहिक बेरोजगारी :– यदि किसी व्यक्ति को एक सप्ताह में एक दिन (8 घंटे) का काम नहीं मिलता है तो उसे साप्ताहिक बेरोजगारी के अंतर्गत रखा जाता है।

दैनिक बेरोजगारी :– यदि किसी व्यक्ति को एक दिन में आधे दिन अर्थात् 4 घंटे का काम नहीं मिलता तो उसे दैनिक बेरोजगारी के अंतर्गत रखा जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि बेरोजगारी की समस्या केवल भारत में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में चिंता जनक रूप से व्याप्त है। भारत एक बहुत तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित हो रहा है और सरकार के द्वारा तथा लोगों का व्यावसायिक क्षेत्र एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में झुकाव को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि आने वाले समय में भारत में बेरोजगार व्यक्तियों की संख्या और बेरोजगारी दर में और कमी आएगी। हालांकि इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि भारत में बेरोजगारी एक बहुत बड़ा मुद्दा है और सरकार और समाज के समन्वित प्रयास से ही हम बेरोजगारी की समस्या से निजात पा सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. Ahuja Ram. social problems in india. india, Rawat publications, jaipur, Rajasthan, 1997, 70-89.
2. Bisht Nitin, pattanaik Falguni. youth in india: Labour Market Performance and Emerging Challenges. Germany, Springer Nature Singapore, Assess on 01-04-2024, 2023.
3. Hobson JA The problem of the Unemployed (Routledge Revivals) : An Enquiry and an Economic policy. N.P. Taylor & Francis, United Kingdom, 2013, 1-10.
4. Vedder Richard K, Gallaway Lowell E. out of work: Unemployment and Goverment in Twentieth-Century America. United Kingdom, NYU Press, 1997, 1-30.
5. https://tetofficial.com/the-fall-of-cottage-industries/,Asses on 02-04-2024.
6. higher-education-and-unemployment/ 920506/, Assess on 02-04-2024.
7. https://rb.gy/6xrzy2, Assess on 02-04-2024.